सदाबहार

(*Catharanthus roseus Syn. Vinca rosea*)

कुल	:	Apocynaceae
हिन्दी नाम	:	सदाबहार, सदासुहागन, बारहमासी, नयनतारा
आयुर्वेदिक नाम	:	नित्य कल्याणी
व्यापारिक नाम	:	सदाबहार
यूनानी नाम	:	सदाबहार
अंग्रेजी नाम	:	Bright eyes, Old maid, Graveyard plant, Cape periwinkle, Madagascar periwinkle
उपयोगी भाग	:	पत्तियाँ एवं जड़

रासायनिक संरचना

इसमे विनक्रिस्टीन (Vincristine) तथा विनब्लास्टीन (Vinblastine) नामक एल्केलॉयड्स पाये जाते है।

औषधीय गुण

उपरोक्त एल्केलॉयड्स की उपस्थिति के कारण सदाबहार के पौधे में औषधीय गुण पाये जाते है तथा इसका उपयोग अनेक रोगों के उपचार तथा औषधि निर्माण में किया जाता है। इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपयोग ल्यूकेमिया (Leukemia) कैंसर के उपचार में है। सदाबहार मस्तिष्क की कोशिकाओं के क्षरण को रोकता है। केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (Central nervous system) को मजबूत करता है तथा स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। इन गुणों के कारण इसका उपयोग मस्तिष्क टॉनिक के रूप में तथा अवसाद (depression) जैसे मानसिक रोगों के उपचार में किया जाता है। यह रक्त शर्करा को कम करता है। अतः इसका उपयोग मधुमेह (Diabetes) के उपचार में भी होता है। मांसपेशियों के दर्द तथा पेट दर्द में भी यह उपयोगी है। इसके अलावा इससे घावों को भरने तथा बर्र (Wasp) के डंक (Sting) की पीड़ा कम करने में भी मदद मिलती है।

वितरण

यह मूल रूप से पूर्वी अफ्रीका के मैडागास्कर नामक देश का पौधा है। भारतीय उपमहाद्वीप में सभी स्थानों पर गृह वाटिकाओं तथा उद्यानों में इसे शोभादार पौधे के रूप में लगाया जाता है। औषधीय पौधे के रूप में दक्षिण भारत में इसकी खेती भी की जा रही है।

आकारिकी

सदाबहार पौधे की अधिकतम ऊँचाई 1 मीटर हो सकती है। इसके पत्ते अण्डाकार होते है तथा शाखाओं पर विपरीत क्रम में लगे होते है। पौधे की बढ़त इतनी साफ–सुथरी तथा सलीकेदार होती है कि इसकी झाड़ियों की काट छांट की कभी जरूरत ही नहीं पड़ती है। सदाबहार के फूल सफेद, चमकीले गुलाबी (Mauve), हल्के धूमिल लाल (peach), जामुनी, सिंदूरी (scarlet) अथवा रक्तिम नारंगी (reddish orange) रंग के होते है। ये छोटे–छोटे गुच्छो में लगते है। अत्यधिक शीतकाल को छोड़कर इस पौधे मे पूरे वर्ष पुष्पन होता रहता है। इसी कारण इस पौधे का नाम सदाबहार रखा गया है। इसके फूल मे पाँच पंखुड़ियाँ होती है। इसमें बीजो से भरी हुई लम्बी फली लगती है। इस पौधे की जड़, पत्तियों तथा डंठल से दूध (latex) निकलता है, जो कि विषैला होता है।

जलवायु एवं मृदा

वैसे तो भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों को छोड़कर अच्छी जल निकासी वाली सभी प्रकार की भूमियों पर इसे लगाया जा सकता है। परन्तु दोमट मिट्टी इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त होती है। 100 से.मी. अथवा इससे अधिक वर्षा वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिए उपयुक्त है। खुले अथवा आंशिक छाया वाले स्थानों पर इसकी खेती की जा सकती है।

कृषि तकनीक

सदाबहार के पौधे बीज से आसानी से तैयार किए जा सकते हैं। चूंकि इसके बीजों की अंकुरण क्षमता लगभग आठ माह में समाप्तप्राय हो जाती है, अतः पुराने बीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसके पौधे पहले पौधशाला में तैयार कर उनका प्रत्यारोपण खेत में किया जा सकता है अथवा सीधे खेत में बीज बुवाई भी की जा सकती

है। एक हेक्टेयर में सदाबहार की खेती हेतु पौधशाला में पौध तैयार करने के लिये लगभग 500 ग्राम बीजों की आवश्यकता होगी परन्तु यदि सीधे खेत में बीज बुवाई करनी हो तो इससे लगभग पाँच गुना अर्थात 2.5 कि.ग्रा. बीज लगेगा।

बीज बुवाई के पूर्व एक–दो दिन पानी में भिगोकर रखने से बीजों की अंकुरण क्षमता काफी बढ़ जाती है। बीज बुवाई के लगभग 8 से 10 दिन में अंकुरण हो जाता है तथा दो से ढाई माह में पौधे प्रत्यारोपण हेतु तैयार हो जाते हैं।

बीज बुवाई अथवा पौधा प्रत्यारोपण के पूर्व खेत की अच्छी तरह से जुताई कर मिट्टी को भुरभुरी बना देना चाहिए। इसके पश्चात् खेत में प्रति हेक्टेयर 8–10 टन गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट खाद, 250 कि.ग्रा. हड्डी का चूर्ण अथवा रॉक फास्फेट तथा नीम की पिसी खली मिला देनी चाहिए। खेत में जल निकासी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए तथा कहीं पर जल भराव की स्थिति नहीं बननी चाहिए।

खेत में सीधे बुवाई हेतु बीज में 8–10 गुना बालू/राख मिला कर बोना चाहिए। यदि पौधे पौधशाला में तैयार किए गए है, तो दो से ढाई माह की आयु के पौधों को जड़ सहित उखाड़ कर खेत मे प्रत्यारोपित करना चाहिए। प्रत्यारोपण का कार्य लगभग 10 से.मी. वर्षा हो जाने के पश्चात् करना चाहिए। खेत में पौधे से पौधे की दूरी 30 से.मी. तथा कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. रखी जाती है। इस प्रकार प्रति हेक्टेयर लगभग 74,000 पौधे प्रत्यारोपित किए जायेंगे।

फसल मे प्रथम निंदाई–गुड़ाई एक माह पश्चात् तथा द्वितीय निंदाई–गुड़ाई पुनः एक माह पश्चात् करनी चाहिए। फसल के चार माह हो जाने पर फूल व पत्तियों को नोचकर तोड़ने से जड़ों की मात्रा में अभिवृद्धि होती है।

फसल कटाई प्रबंधन

6 माह की फसल हो जाने पर पहली बार पत्तियों की तुड़ाई की जाती है। फिर तीन माह के पश्चात् दोबारा पत्तियों को तोड़ा जा सकता है। तोड़ी गई पत्तियों को छाया में पक्के एवं साफ फर्श पर सुखाना चाहिए ताकि इनमें फफूंद न लगे। इसके कुछ समय पश्चात् जड़ों को तने के साथ उखाड़ कर सुखाया जाता है। बारह माह की फसल होने पर जड़ों में एल्केलॉयड्स की मात्रा ज्यादा होती है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियों, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करें।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले-स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर-482008 (म.प्र.)

संपर्क : 0761-2665540, 9300481678, 9724638622, फैक्स : 0761-2661304

ई-मेल : rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब : http://www.rcfccentral.org

सदाबहार

(*Catharanthus roseus Syn. Vinca rosea*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020